

Third Battalion The Garhwal Rifles

3 Garhwal Rifles was raised at Lansdowne by Lieutenant Colonel JMT Hogg on 20 August 1916 and was christened as 3rd Battalion 39th Garhwal Rifles. Soon after raising, the battalion participated in the Third Afghan War in 1919. The services of the battalion were recognised by the grant of the Indian General Service Medal 1908 with Clasp, 'Afghanistan, NW frontier 1919'. The battalion was rechristened as 3rd Battalion, 18th Royal Garhwal Rifles on 01 October 1921.

In 1940, during the Second World War the battalion fought gallantly in the famous battle of Gallabat and earned one of the first victories of the war for the allied forces. For this rare feat, Field Marshal Viscount Slim, who was then the Brigade Commander, while reminiscing, years after the war, said:-

“I suppose I have commanded battalions of every regiment of the Indian Army but I never had a better one than yours and Snab Taylor's 3rd Garhwalis and that's something for such a dyed in the wool Gurkha as me to say. But it's true. They were splendid”.

As an apt recognition of the valiant efforts of the 'Bhullas' throughout the Second World War, the battalion was conferred with **Battle Honours of 'Gallabat', 'Keren', 'Berento', 'Massawa', 'Amba Alagi' and 'Citta De Castello'** and **Theatre Honours of 'Abyssinia', 'North Africa' and 'Italy'**.

The major awards won by the battalion pre-Independence included two Distinguished Service Order, 11 Indian Order of Merit, 13 Military Cross, 12 Indian Distinguished Service Medal and 13 Military Medals.

During 1948, fighting to defend the frontiers of independent India at Tithwal, the battalion was awarded one Mahavir Chakra (awarded to Lieutenant Colonel Kaman Singh Pathania, the Commanding Officer), 18 Vir Chakra, Two Shaurya Chakra and 19 Mention-in-Despatches in one single operation, which has few parallels in the annals of the Indian Army. The battalion was honoured with **battle honour of 'Tithwal'** and **Theatre Honour of 'Jammu & Kashmir'**.

The battalion also has the unique distinction of being part of the first ever overseas contingent of the Indian Army post independence, wherein it was employed in the Human Repatriation Mission in Korea during 1953-54. The battalion has performed impressively in a number of other operations such as 1965 War, 1971 War, Operation Blue Star, Operation Shanti, Operation Trident, Operation Kartoose, Operation Parakram and Operation Rakshak.

The rich legacy of the battalion since its raising has always been fuelling pride and quest for excellence in all ranks of the battalion as they march on towards greater heights of glory and success.

The Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Third Battalion The Garhwal Rifles.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent
Stamp / FDC / : Smt. Nenu Gupta
Brochure /
Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



तृतीय बटालियन दि गढ़वाल राइफल्स
THIRD BATTALION THE GARHWAL RIFLES

विवरणिका **BROCHURE**

तृतीय बटालियन दि गढ़वाल राइफल्स

तृतीय गढ़वाल राइफल्स की स्थापना ले. कर्नल जे.एम.टी. हॉग द्वारा 20 अगस्त, 1916 को लैंसडाउन में तीसरी बटालियन 39वीं गढ़वाल राइफल्स के नाम से की गई थी। स्थापना के तुरन्त बाद, बटालियन ने सन् 1919 में तृतीय अफगान युद्ध में भाग लिया जिसमें बटालियन की सेवाओं के मान्यतास्वरूप इसे “अफगानिस्तान, उत्तर पश्चिम सीमा 1919” की रजत पट्टी के साथ भारतीय सामान्य सेवा मेडल 1908 से पुरस्कृत किया गया। 01 अक्टूबर, 1921 को इस बटालियन को तृतीय बटालियन, 18वीं रॉयल गढ़वाल राइफल्स का नाम दिया गया।

सन् 1940 में, बटालियन ने द्वितीय विश्व युद्ध की मशहूर गलाबात की लड़ाई में अपनी वीरता का परिचय दिया और मित्र सेनाओं के लिए एक महत्वपूर्ण जीत हासिल की। बटालियन की इस अतुल्य उपलब्धि पर, उस समय के ब्रिगेड कमान्डर फील्ड मार्शल विस्काउन्ट स्लिम ने युद्ध के कुछ सालों बाद, युद्ध स्मृतियों का स्मरण करते हुए कहा:-

“मेरे ख्याल से मैंने भारतीय सेना की सभी रेजिमेंट की बटालियनों की कमान संभाली है, परन्तु आज तक मुझे स्नैब टेलर के तृतीय गढ़वालियों जैसा कोई नहीं मिला। मेरे जैसे समर्पित गोरखा के लिए यह कहना बहुत बड़ी बात है, परन्तु यह सही है; वे अद्वितीय थे।”

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बटालियन की अतुलनीय उपलब्धियों और अद्वितीय रण कौशल के लिए इसे “गलाबात”, ‘केरेन’, ‘बेरेन्टो’, ‘मसावा’, अम्बा अल्गी’ और ‘सीट्टा डि कैसटेलो’ के बैटल ऑनर तथा ‘एबीसीनीया’, उत्तर अफ्रीका’ व ‘इटली’ के थिएटर ऑनर्स से सम्मानित किया गया।

बटालियन की स्थापना से लेकर देश की आजादी तक बटालियन द्वारा अर्जित पुरस्कारों में 02 डिस्टिंग्विश्ड सर्विस आर्डर, 11 इंडियन आर्डर ऑफ मेरिट, 13 मिलिट्री क्रॉस, 12 इंडियन डिस्टिंग्विश्ड सर्विस मेडल व 13 मिलिट्री मेडल शामिल हैं।

सन् 1948 के दौरान, देश की सरहदों की रक्षा करते हुए तिथवाल की लड़ाई में बटालियन ने एक बार फिर अपने शौर्य का परिचय दिया और इस लड़ाई के लिए बटालियन को 01 महावीर चक्र (ले. कर्नल कमान सिंह पठानिया, कमान अधिकारी), 18 वीर चक्र, 02 शौर्य चक्र तथा 19 मेन्शन-इन-डिस्पेचेज से सम्मानित किया गया, जिसकी भारतीय सेना के इतिहास में वीरता एवं बलिदान की बहुत कम मिसाल हैं। बटालियन को बैटल ऑफ ऑनर ‘तिथवाल’ तथा थिएटर ऑनर ‘जम्मू और कश्मीर’ से सम्मानित किया गया।

इस बटालियन को स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सेना को विदेश में तैनात किए जाने वाले प्रथम सैन्यदल का गौरव हासिल है, जिसे 1953-54 के दौरान कोरिया में मानव प्रत्यावर्तन मिशन में तैनात किया गया था। बटालियन ने देश-विदेश में सैन्य कार्रवाई में सराहनीय व अनुकरणीय रूप से अपनी जिम्मेदारी निभाई है, जिसमें सन् 1965 का युद्ध, सन् 1971 का युद्ध, ऑपरेशन ब्लू स्टार, ऑपरेशन शांति, ऑपरेशन ट्राइडेंट, ऑपरेशन कारतूस, ऑपरेशन पराक्रम एवं ऑपरेशन रक्षक शामिल हैं। इस बटालियन के जवानों ने ऐसे हर मौके पर अपनी बहादुरी का परिचय दिया है।

अपनी स्थापना के समय से ही इस बटालियन की समृद्ध विरासत ने सभी रैंक के सैनिकों में गौरव और उत्कृष्टता का भाव जाग्रत किया है तथा उन्हें गौरव और सफलता की ऊंचाइयों की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया है।

डाक विभाग तृतीय बटालियन दि गढ़वाल राइफल्स पर स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/: श्रीमती नीनू गुप्ता
विवरणिका/विरूपण



मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	402290
Stamps Printed	:	402290
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00